गद्य खंड

''जिस पुस्तक से यह उद्देश्य सिद्ध नहीं होता, जिससे मनुष्य का अज्ञान, कुसंस्कार और अविवेक दूर नहीं होता, जिससे मनुष्य शोषण और अत्याचार के विरुद्ध सिर उठाकर खड़ा नहीं हो जाता, जिससे वह छीना-झपटी, स्वार्थपरता और हिंसा के दलदल से उबर नहीं पाता, वह पुस्तक किसी काम की नहीं है।''

– ***हजारी प्रसाद द्विवेदी***

© NCERT not to be republished

© NCERT
not to be republished

गद्य का पठन-पाठन

'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।' गद्य को कवि की कसौटी कहा गया है क्योंकि अच्छा गद्य लेखक अपने अनुभवों और विचारों की अभिव्यक्ति सरल और सरस भाषा में इस प्रकार करता है कि वह प्रभावपूर्ण हो उठती है। वह अपने विचारों को एक व्यवस्थित क्रम में तथा तर्कपूर्ण ढंग से रखता है। अपनी भाषा को अधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए वह कभी मुहावरों का प्रयोग करता है तो कभी लोकोक्तियों का। प्रसंग की आवश्यकता के अनुसार कभी सपाट और सरल भाषा का प्रयोग करता है तो कभी व्यंग्यपूर्ण लाक्षणिक भाषा का। यहाँ गद्य पाठों का संकलन इस दृष्टि से किया गया है कि विद्यार्थी को विविध भाषा-प्रयोगों और व्यवहारों से परिचित कराया जा सके, जिससे भाषा प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है।

पाठ्यपुस्तक में यथासंभव विविध विधाएँ संकलित करने का प्रयास किया गया है। इन पाठों के द्वारा वैचारिक, वैज्ञानिक तथा ललित निबंधों के अतिरिक्त साहसिक यात्रा-विवरण, संस्मरण, जीवनी, व्यंग्य, कहानी आदि का सामान्य परिचय विद्यार्थी को मिल सकेगा।

पठन

शब्दों का शुद्ध उच्चारण और वाक्यों को उचित आरोह-अवरोह, तान-अनुतान तथा बलाघात के साथ पढ़ना मुखर पठन में अपेक्षित होता है। प्रत्येक पाठ में कुछ-न-कुछ शब्द समूह, पदबंध एवं वाक्य ऐसे होते हैं जिनका अभ्यास करने में कठिनाई हो सकती है। ऐसे शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए और पठन से पहले उनका उच्चारण-अभ्यास अवश्य करवाना चाहिए। एक ही अंश को कमज़ोर और दक्ष छात्र से पढ़वाने पर अन्य

© NCERT not to be republished

छात्र उसका आलोचनात्मक श्रवण कर सकेंगे। यद्यपि मुखर पठन की द्रुत या धीमी गति की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती, किंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि वह सामान्यत: वार्तालाप की गति से धीमी होती है।

मौन पठन आज के युग की शैक्षणिक आवश्यकता है। अत: शिक्षक को मौन पठन विशेष सजगता से कराना चाहिए। मौन पठन कराने से पहले कठिन शब्दों के अर्थ समझा देने चाहिए। पठन के लिए उचित समय देकर अर्थग्रहण का परीक्षण अवश्य किया जाना चाहिए।

विचार-बोध

गद्य में भावों की अपेक्षा विचारों की प्रधानता होती है जिन्हें लेखक सुसंबद्ध अनुच्छेदों द्वारा अभिव्यक्त करता है। पाठ में अनुच्छेदों का महत्त्व होता है अत: उन्हें उसी क्रम में पढ़ाया जाना चाहिए। पाठ पढ़ने के बाद उसके प्रभाव की पकड़ का परीक्षण किया जाना चाहिए। विचार-बोध के प्रश्न समग्र पाठ को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं। पूर्ण प्रभाव के लिए पाठ में आए उन छोटे-छोटे विचारों के परस्पर संबंधों पर भी विचार करना चाहिए जो समग्र प्रभाव बनाने में सहायक होते हैं।

भाषा-प्रयोग

पाठ में आए हुए विविध भाषा-प्रयोग विद्यार्थियों के भाषा-सीखने एवं उनकी संप्रेषण-क्षमता के विकास में सहायक हो सकते हैं। पठन-पाठन के समय उन पर अवश्य ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रश्न-अभ्यासों में दिए गए भाषा-प्रयोग तो बानगी मात्र हैं। हाँ, उन्हें आधार के रूप में अवश्य स्वीकार किया जा सकता है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भाषा अधिक सहज, व्यंजक, प्रभावपूर्ण और संप्रेषणीय बनती है। वाक्य के स्वाभाविक क्रम को कभी-कभी बदल देने से अभिव्यक्ति अधिक सशक्त बन जाती है। अलंकारों का प्रयोग केवल कविता में ही नहीं, गद्य में भी किया जाता है, जैसे-'तुम कब जाओगे, अतिथि' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए-

"तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी ज़मीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की

© NCERT not to be republished

बैंजनी चट्टान देख ली; तुम मेरी काफ़ी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि!" तथा 'कीचड़ का काव्य' की इस पंक्ति को देखें–"देखते-देखते वहाँ के बादल श्वेत पूनी जैसे हो गए और यथाक्रम दिन का आरंभ हो गया।"

निश्चय ही इन प्रयोगों से अभिव्यक्ति का सौंदर्य बढ़ गया है। ऐसे प्रयोगों पर न केवल ध्यान दिया जाना चाहिए बल्कि उनके अधिकाधिक प्रयोग करने को भी प्रोत्साहित करना चाहिए।

मौखिक अभिव्यक्ति

व्यावहारिक जीवन में भाषा का सर्वाधिक प्रयोग मौखिक रूप में ही होता है। इन पाठों के पठन-पाठन के समय मौखिक अभिव्यक्ति के अधिकाधिक अवसरों और साधनों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। पाठ में आई हुई वाक्य संरचनाओं के आधार पर समान वाक्य बोलने का अभ्यास कराया जा सकता है। पाठों में ऐसे विषय मिल सकते हैं जिनके आधार पर भाषण-प्रतियोगिता, वाद-विवाद, आशु-रचना आदि का आयोजन किया जा सकता है। ऐसे आयोजन कक्षा में और कक्षा से बाहर भी किए जा सकते हैं।

योग्यता-विस्तार

किसी भी पाठ्यपुस्तक में पाठों की संख्या तो सीमित ही होती है, किंतु उनको आधार बनाकर अनेकानेक कुशलताओं का विकास कराया जा सकता है। 'योग्यता-विस्तार' शीर्षक में ऐसी कुछ कुशलताओं और योग्यताओं के संकेत दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे भी प्रयत्न किए जा सकते हैं, जिनसे विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति का विकास हो, उनके ज्ञान में वृद्धि हो और उनके चिंतन को दिशा मिल सके। विविध विधाओं के पठन-पाठन का ढंग एक-सा नहीं होता। प्रत्येक विधा की अपनी शैलीगत विशेषताएँ होती हैं, उन्हें ध्यान में रखना चाहिए।

कुल मिलाकर इन पाठों के पठन-पाठन में ऐसे सभी संभव प्रयत्न किए जाने चाहिए, जिनसे विद्यार्थियों की लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति का अधिकाधिक विकास हो और हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति उनकी रुचि जाग्रत हो।

© NCERT not to be republished

रामविलास शर्मा

(1912 - 2000)

रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में सन् 1912 में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा गाँव में पाई। उच्च शिक्षा के लिए ये लखनऊ आ गए। वहाँ से इन्होंने अंग्रेज़ी में एम.ए. किया और विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग में प्राध्यापक हो गए। प्राध्यापन काल में ही इन्होंने पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की। लेखन के क्षेत्र में पहले-पहले कविताएँ लिखकर फिर एक उपन्यास और नाटक लिखने के बाद पूरी तरह से आलोचना कार्य में जुट गए। रामविलास शर्मा प्रगतिशील आलोचना के सशक्त हस्ताक्षर माने जाते हैं। इन्होंने गोस्वामी तुलसीदास और महाप्राण निराला के काव्य को नए निकष पर परखा।

रामविलास शर्मा की प्रमुख कृतियाँ हैं : *भारतेंदु और उनका युग, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, प्रेमचंद और उनका युग, निराला की साहित्य साधना* (तीन खंड), *भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी* (तीन खंड), *भाषा और समाज, भारत में अंग्रेज़ी राज और मार्क्सवाद, इतिहास दर्शन, भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, गांधी, अंबेडकर, लोहिया और भारतीय इतिहास की समस्याएँ, बुद्ध वैराग्य और प्रारंभिक कविताएँ, सदियों के सोए जाग उठे* (कविता), *पाप के पुजारी* (नाटक), *चार दिन* (उपन्यास) और *अपनी धरती अपने लोग* (आत्मकथा)।

रामविलास शर्मा को साहित्य अकादमी, व्यास सम्मान, शलाका सम्मान आदि से सम्मानित किया गया। इन्होंने पुरस्कारस्वरूप मिली राशि साक्षरता प्रसार हेतु दान कर दी।

कई मुहावरों, लोकोक्तियों, देशज शब्दों और अन्य रचनाकारों की रचनाओं के उद्धरणों से ली गई सूक्तियों तथा पंक्तियों से ओत-प्रोत इस पाठ में लेखक ने धूल की महिमा और माहात्म्य, उपलब्धता और उपयोगिता का बखान किया है। अपनी किशोर और युवावस्था में पहलवानी के शौकीन रहे डॉ. शर्मा अपने इस पाठ के बहाने पाठकों को अखाड़ों, गाँवों और शहरों के जीवन-जगत की भी सैर कराते हैं। साथ ही धूल के नन्हें कणों के वर्णन से देश प्रेम तक का पाठ पढ़ाने से नहीं चूकते। इस पाठ को पढ़ने के बाद पाठक 'धूल' को यूँ ही धूल में न उड़ा सकेगा।

© NCERT not to be republished

धूल

हिंदी-कविता की सबसे सुंदर पंक्तियों में से एक यह है :

'जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए।'

हीरे के प्रेमी तो शायद उसे साफ़-सुथरा, खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ देखना पसंद करेंगे। परंतु हीरे से भी कीमती जिस नयन-तारे का ज़िक्र इस पंक्ति में किया गया है वह धूलि भरा ही अच्छा लगता है। जिसका बचपन गाँव के गलियारे की धूल में बीता हो, वह इस धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना कर ही नहीं सकता। फूल के ऊपर जो रेणु उसका शृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है। अभिजात वर्ग ने प्रसाधन-सामग्री में बड़े-बड़े आविष्कार किए, लेकिन बालकृष्ण के मुँह पर छाई हुई वास्तविक गोधूलि की तुलना में वह सभी सामग्री क्या धूल नहीं हो गई?

हमारी सभ्यता इस धूल के संसर्ग से बचना चाहती है। वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है, इसलिए शिशु भोलानाथ से कहती है, धूल में मत खेलो। भोलानाथ के संसर्ग से उसके नकली सलमे-सितारे धुँधले पड़ जाएँगे। जिसने लिखा था-"धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की," उसने भी मानो धूल भरे हीरों का महत्त्व कम करने में कुछ उठा

© NCERT not to be republished

न रखा था। 'धन्य–धन्य' में ही उसने बड़प्पन को विज्ञापित किया, फिर 'मैले' शब्द से अपनी हीनभावना भी व्यंजित कर दी, अंत में 'ऐसे लरिकान' कहकर उसने भेद–बुद्धि का परिचय भी दे दिया। वह हीरों का प्रेमी है, धूलि भरे हीरों का नहीं।

शिशु भोलानाथ के संसर्ग से तो 'मैले जो करत गात' की नौबत आई, अखाड़े की मिट्टी में सनी हुई देह से तो कहीं उबकाई ही आने लगे। जो बचपन में धूल से खेला है, वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता है? रहता है तो उसका दुर्भाग्य है और क्या! यह साधारण धूल नहीं है, वरन् तेल और मट्ठे से सिझाई हुई वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है। संसार में ऐसा सुख दुर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है, जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं, आराम से वह हरा होता है, अखाड़े में निर्द्वंद्व चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी लगाता है। मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि शरीर भी तो मिट्टी का ही बना हुआ है।

शरीर और मिट्टी को लेकर संसार की असारता पर बहुत कुछ कहा जा सकता है परंतु यह भी ध्यान देने की बात है कि जितने सारतत्त्व जीवन के लिए अनिवार्य हैं, वे सब मिट्टी से ही मिलते हैं। जिन फूलों को हम अपनी प्रिय–वस्तुओं का उपमान बनाते हैं, वे सब मिट्टी की ही उपज हैं। रूप, रस, गंध, स्पर्श–इन्हें कौन संभव करता है? माना कि मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में। मिट्टी की आभा का नाम धूल है और मिट्टी के रंग–रूप की पहचान उसकी धूल से ही होती है।

ग्राम–भाषाएँ अपने सूक्ष्म बोध से धूल की जगह गर्द का प्रयोग कभी नहीं करतीं। धूल वह, जिसे गोधूलि शब्द में हमने अमर कर दिया है। अमराइयों के पीछे छिपे हुए सूर्य की किरणों में जो धूलि सोने को मिट्टी कर देती है, सूर्यास्त के उपरांत लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद जो रुई के बादल की तरह या ऐरावत हाथी के नक्षत्र–पथ की भाँति जहाँ की तहाँ स्थिर रह जाती है, चाँदनी रात में मेले जानेवाली गाड़ियों के पीछे जो कवि–कल्पना की भाँति उड़ती चलती है, जो शिशु

© NCERT not to be republished

के मुँह पर, फूल की पंखुड़ियों पर साकार सौंदर्य बनकर छा जाती है—धूल उसका नाम है।

गोधूलि पर कितने कवियों ने अपनी कलम नहीं तोड़ दी, लेकिन यह गोधूलि गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के बाटे नहीं पड़ी। एक प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता के निमंत्रण-पत्र में गोधूलि की बेला में आने का आग्रह किया गया था, लेकिन शहर में धूल-धक्कड़ के होते हुए भी गोधूलि कहाँ? यह कविता की विडंबना थी और गाँवों में भी जिस धूलि को कवियों ने अमर किया है, वह हाथी-घोड़ों के पग-संचालन से उत्पन्न होनेवाली धूल नहीं है, वरन् गो-गोपालों के पदों की धूलि है।

'नीच को धूरि समान' वेद-वाक्य नहीं है। सती उसे माथे से, योद्धा उसे आँखों से लगाता है, युलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूलि चूमी थी। यूक्रैन के मुक्त होने पर एक लाल सैनिक ने उसी श्रद्धा से वहाँ भी धूल का स्पर्श किया था। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन है? यहाँ तक कि घृणा, असूया आदि के लिए भी धूल चाटने, धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं।

धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि की व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य, धूलि उसकी कविता है। धूली छायावादी दर्शन है, जिसकी वास्तविकता संदिग्ध है और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता जो भी हो। मिट्टी काली, पीली, लाल तरह-तरह की होती है, लेकिन धूल कहते ही शरत् के धुले-उजले बादलों का स्मरण हो आता है। धूल के लिए श्वेत नाम का विशेषण अनावश्यक है, वह उसका सहज रंग है।

हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे। किसान के हाथ-पैर, मुँह पर छाई हुई यह धूल हमारी सभ्यता से क्या कहती है? हम काँच को प्यार करते हैं, धूलि भरे हीरे में धूल ही दिखाई देती है, भीतर की कांति आँखों से ओझल रहती है, लेकिन ये हीरे अमर हैं और एक दिन अपनी अमरता का प्रमाण भी देंगे। अभी तो उन्होंने अटूट होने का ही प्रमाण दिया है—"हीरा वही घन चोट न टूटे।" वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा। तब हम हीरे से लिपटी हुई धूल को भी माथे से लगाना सीखेंगे।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं?
2. लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?
3. मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए–

1. धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?
2. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?
3. अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?
4. श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?
5. इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है?

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए–

1. लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?
2. लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?
3. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?
4. 'हीरा वही घन चोट न टूटे'– का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
5. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।
6. 'धूल' पाठ का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।
7. कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है?

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए–

1. फूल के ऊपर जो रेणु उसका श्रृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।
2. 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की'– लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है?
3. मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में।

© NCERT not to be republished

4. हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।
5. वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग छाँटिए–
   उदाहरण: *विज्ञापित– वि (उपसर्ग) ज्ञापित*
   संसर्ग, उपमान, संस्कृति, दुर्लभ, निर्द्वंद्व, प्रवास, दुर्भाग्य, अभिजात, संचालन।
2. लेखक ने इस पाठ में धूल चूमना, धूल माथे पर लगाना, धूल होना जैसे प्रयोग किए हैं। धूल से संबंधित अन्य पाँच प्रयोग और बताइए तथा उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

योग्यता-विस्तार

शिवमंगल सिंह सुमन की कविता 'मिट्टी की महिमा', नरेश मेहता की कविता 'मृत्तिका' तथा सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की 'धूल' शीर्षक से लिखी कविताओं को पुस्तकालय में ढूँढ़कर पढ़िए।

परियोजना कार्य

इस पाठ में लेखक ने शरीर और मिट्टी को लेकर संसार की असारता का ज़िक्र किया है। इस असारता का वर्णन अनेक भक्त कवियों ने अपने काव्य में किया है। ऐसी कुछ रचनाओं का संकलन कर कक्षा में भित्ति पत्रिका पर लगाइए।

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ

खरादा हुआ	–	सुडौल और चिकना बनाया हुआ
रेणु	–	धूल
श्रृंगार	–	सजावट
पार्थिवता	–	पृथ्वी से संबंधित, मिट्टी संबंधी
अभिजात	–	कुलीन
प्रसाधन सामग्री	–	श्रृंगार की सामग्री
गोधूलि	–	सायंकाल जंगल से लौटते समय गायों के खुर से उड़ती हुई धूलि
संसर्ग	–	संपर्क
कनिया	–	गोद
विज्ञापित	–	सूचित

© NCERT not to be republished

लरिकान	–	बच्चे
नौबत	–	हालत
सिझाई	–	पकाई हुई
निर्द्वंद्व	–	जहाँ कोई द्वंद्व न हो, जिसका कोई विरोधी न हो
असारता	–	साररहित, जिसका कोई सार न हो
सूक्ष्मबोध	–	बातों की गहराई को समझने की क्षमता
अमराइयों	–	आम के बाग
नक्षत्र पथ	–	नक्षत्रों का मार्ग
विडंबना	–	छलना, विसंगति
बाटे	–	हिस्से
नीच को धूरि समान	–	धूल के समान तुच्छ कौन है
यूलिसिस	–	होमर के महाकाव्य 'ओडेसी' का एक प्रमुख पात्र जो कठिनाइयों से संघर्ष करनेवाले व्यक्ति का प्रतीक बन गया है
प्रवास	–	परदेश वास
इथाका	–	यूनान का एक स्थान
यूक्रैन	–	एक देश
व्यंजना	–	शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिससे उसके सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है
असूया	–	ईर्ष्या
छायावादी दर्शन	–	प्रकृति और सृष्टि के रहस्यों को अति गूढ़ भावों में व्यंजित करना
संदिग्ध	–	जिसमें संदेह हो
कांति	–	चमक

© NCERT not to be republished